मैला आँचल

और

इदन्नमम्

(उपन्यास:संवेदना और शिल्प)

डॉ. परिमला अंबेकर

मैला आँचल और इदन्नमम्

(उपन्यास: संवेदना और शिल्प)

डॉ. परिमला अंबेकर

अर्पण...

विद्यार्थी के उन तमाम

परिश्रम के प्रति

जिससे

परंपरा एवं परिदृश्य के

कुलाबें जुड़ते जाते हैं....

अनुक्रम

सबसे पहले.....	5
मैला आँचल : संवेदना और शिल्प	6
इदन्नमम् : संवेदना और शिल्प	53
प्रश्न/कुंजी:	107

विचारधारा का प्रवाह लगभग भारतीय घरों की बनत है। अपनेघरों के बंधाव और आंतरिक संयोजन में एक अव्यक्त संवेग और संवेदना का रचाव का होना हम देखते हैं। दहलीज लांघकर भीतर प्रवेश करते ही ढ़च्योढ़ी, भीतरी आहाता, दालान, बैठक, तुलसीचौरा, रसोयी, भंढ़ारा, हमाम और अपने ढ़ंग सेसजा सँवरा ठाकुर द्वार। घरों का यह बंध शहरों में अलग तरतीब और आधुनिक नक्काशों, कांच, सेसजा संवारा जरूर हो लेकिन आंतरिक बसाव के मूल की संवेदना और रचाव की शालीनता की समानता को शिद्दत से आज भी महसूस किया जा सकता है। अर्थात, घर की परिभाषा, उसकी ग्रामीण या शहरी, महल या झोपड़ी, उच्चजन या हरिजन की बस्ती के वर्ग और वर्णगत श्रेणीकृतत्व की तात्विकता विभेदता के परहेज से परेशुद्ध मानवीय संवेदना के और व्यक्ति और समष्टि के संबंधों के आधार पर टिकी हुई होती है। ठीक उसी तरह प्रेमचंद के कथा साहित्य के माध्यम से प्रवाहित विचारधारा अपने मूल में भारतीय घरों के बनत के बुनियाद में निहित मानवीयता और सद्भाष्यता के वास्तु को सहजतया पहचानते जाते हैं। इस भारतीय घरों की बनत की कल को उसके वास्तुबंध को अपनी जीवन संपूर्णता में अनुभदकर, उसके रचनात्मक प्रस्तुतियों को देने वाले और भी उपन्यास लेखक हिंदी में जरूर पहचाने जाते आए है, उनमें फणीश्वरनाथ रेणु, मैत्रेयी पुष्पा भी रहे हैं.....

डॉ. परिमला अंबेकर

सबसे पहले.....

मैला आँचल और इदन्नमम् उपन्यास पर लिखा गया प्रस्तुत मैटर अभ्यास एवं परीक्षा की दृष्टि से लिखा गया एक विधागत तात्विक विमर्श है जो अध्ययनकर्ता को रचनाकार के मूल सृजनात्मक तात्पर्य की ओर जरुर ले जाएगा साथ ही रचनाकार के वैचारिक धरातल के विरासत को भी सम्मुख खोलते जाएगा। उपन्यास का अध्ययन जितना लेखकीय जीवन के घटनात्मक आयाम से जुड़ा रहता है उतनी ही गहनता से वह उपन्यास लेखन की वैचारिक परंपरा से भी बंधा रहता है। उपन्यास रचनाओं का वस्तु और शैलिगत विवेचन रचनाकार की कलात्मकता की सार्थकता को दर्शाने के साथ-साथ उसकी जीवंत मानवीय दृष्टिकोण को भी प्रतिकार्थ करते जाता है। प्रेमचंद उपन्यास परंपरा की अगली कड़ी के रुप में प्रस्तुत उभय उपन्यास अपनी रचना संविधान में भारतीय ग्रामांचलीय जीवन की वास्तविक चित्र को खींचते है। भारतीय समुदायी जीवन के मूल में निहित जातीय व्यवस्था और वर्गीय मनोभावना के समीकरणों को ये उपन्यास सहजता से सुलझाते जाते हैं। देश के ग्रामांचलीय जीवन की संस्कृति अंचलीय भाषा का ठेठपन, निपट शुद्ध जमीनी संस्कार के पात्र, अत्यंत करीबी से देखे सुने घटनाओं की बुनावट आदि लेखक के मानवीय जीवन के प्रति की सहानुभूति, चिंता के सृजनात्मक प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। प्रस्तुत दोनों विमर्श उपन्यास पाठ के इन नये डिस्कोर्स को आंकने के विनम्र प्रयास हैं।

धन्यवाद्

डॉ. परिमला अंबेकर

विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग,

गुलबर्गा विश्वविद्यालय, गुलबर्गा

मैला आँचल : संवेदना और शिल्प

प्रस्तुत उपन्यास *मैला आँचल* के अध्ययन का उद्देश्य, साहित्यिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक पृष्ठभूमि में रचनाकार *फणीश्वरनाथ रेणू* के गहन और अत्यंत जागरुक सामाजिक सर्वोत्कृष्ट चिंतन को पहचानना है। लेखक *फणीश्वरनाथ रेणू* हिंदी कथा साहित्य के इतिहास में एक विशिष्ट विधा को लेकर उपस्थित होते हैं। *रेणू* का कथा संसार अपने क्षेत्रीय परिवेश की जीवंतता और चरित्रों की वास्तविक अस्तित्व की एक विशिष्ट रचनात्मक मान्यता को लेकर उपस्थित होता है। संपूर्ण कथा लोक अपनी क्षेत्रीय महक और रंग को लेकर चित्रित होता हुआ हम देखते हैं। प्रस्तुत उपन्यास *मैला आँचल* की इसी आँचलीय परिवेश और रचनात्मकता की तादात्मयता का अध्ययन करना ही प्रस्तुत लेख का उद्देश्य है।

रेणू हिंदी कथा साहित्य के क्षेत्र में आँचलिक उपन्यासकार के रुप में पहचाने जाते हैं। *रेणू* अपने उपन्यासों में बिहार राज्य के विविध क्षेत्रीय परिवेश की विशेषता को वहाँ की सांस्कृतिक और जीवन व्यवहार को जीवंत कैनवास पर उतारते जाते है। *मैला आँचल* उपन्यास में रेणू बिहार के पूर्णिया जिले में स्थित ग्रामीण जीवन की स्वतंत्रतापूर्व के परिवेश को कथा रुप देते हैं। कारण प्रस्तुत उपन्यास के अध्ययन के माध्यम से रेणू द्वारा कथाबद्ध किये हुए देश के उत्तर पूर्वोत्तर अंचल में स्थित ग्रामीण जीवन के वास्तविक स्वरुप का अध्ययन करना है। रेणू द्वारा रचित मैला आँचल आँचलीय रचना विधा की विशिष्टता का परख प्रस्तुत है।

फणीश्वरनाथ रेणू रचित मैला आँचल अंचल विशेष की कथा कहता है। बिहार प्रदेश विशेष की एक विशिष्ट गाँव की स्वतंत्र्य पूर्व और स्वातंत्र्योत्तर काल खंड की सांस्कृतिक परिवेश और वहाँ की सभ्यता को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत उपन्यास उस कालखंड की सामाजिक जीवन का जीवंत दस्तावेज भी है। तत्कालीन बदलते परिवेश के साथ एक तरह से अछूता भी और बाहरी परिवर्तनों को अपने ढंग से स्वीकारने वाला समाज विशेष, उसकी सभ्यता और संस्कृति को एक विशिष्ट अंदाज में मैला चल खोलते जाता है।

हिंदी साहित्य के उपन्यास जगत में रेणू अपनी इस विशिष्ट शैली और कथ्य के टेकनीक से एक बिल्कुल

ही अलग किस्म की कथा संभाव्यता को प्रस्तुत करते हैं। हिंदी कथा जगत पहली बार अपनी लुटी पिटी परिपाटी और स्वरुप से बाहर आता है और बिल्कुल ही नितांत देशीय और वास्तविक तकनीक से पाठकों को परिचय करवाता है।

हिंदी उपन्यास साहित्य में जिन चन्द कथाकृतियों ने युगांतर उपस्थित किया है, मैला आँचल उन्हीं में से एक है। 1954-55 में इस उपन्यास का प्रकाशन एक घटना की तरह था। इसकी कथाभूमि उत्तरी बिहार का पूर्णिया अंचल है और कथाकाल आजादी के कुछ बरस बाद का। एक सामाजिक और राजनैतिक चेतनासंपन्न लेखक की हैसियत से रेणू यहाँ उस परिवर्तन को बड़ी बारीकी से चित्रित करते हैं जो आजादी के फलस्वरुप गांवों में आया है और जो सिर्फ परिवेशगत ही नहीं बल्कि भीतरी-व्यक्ति के मनोजगत में भी घट रहा है। इसके लिए लेखक ने लोक-संस्कृति, लोक-विश्वासों और लोगों के जीवनक्रम पर पड़नेवाले प्रभावों को गहरी आत्मीयता से उकेरा है। इसका समूचा कथावृत अपनी रोचकता और मार्मिकता में व्यापक रुपों को आत्मसात किये हुए है।

वस्तुत: रेणू की आँचलिक संलग्नता, उनकी रागात्मक कथादृष्टि और रचनात्मक भाषा-शैली इस उपन्यास के पात्रों और परिवेश को पाठकीय अनुभव का जीवंत और अविस्मरणीय अंग बना देते हैं।" (उपन्यास के पिछले पृष्ठ का मैटर)

प्रस्तुत अध्ययन, रेणु कृत मैला आँचल की औपन्यासिक विशेषता लेखक के सृजनात्मक तात्पर्य और समकालीन जीवन और समाज के प्रति के सरोकारों की पृष्ठभूमि में अवलोकन करने का ही है। साथ ही विशिष्ट आँचलिक विधा परंपरा के संदर्भ में प्रसक्त उपन्यास के महत्व का अवगाहन का भी तात्पर्य रखता है। अपने प्रथम उपन्यास मैला आँचल के द्वारा ही अत्यंत प्रसिद्धी के शिखर को छूनेवाले रेणू की सृजनात्मक चिंताओं का और उपन्यास द्वारा लेखक के सिद्धांतों की प्रस्तुति के चिंतन और प्रयत्न को परखना भी अध्ययन का तात्पर्य रखता है। रेणू का निधन अल्पायु में ही हुआ। लेकिन इस जीवन के अल्प अवधी में ही रेणू साहित्य और सामाजिक जगत में जिन सफलताओं को प्राप्त किया उसका सुंदर उदाहरण ही है रेणू कृत मैला आँचल। नवीन कथाभूमि प्रचलित कथ्य शैली और भाषा के स्थान पर सहज और वास्तविक आँचलिक टेकनीक का प्रयोग रेणू की अपनी ही विशिष्टता साधना है।